an>

title: Need to build a memorial of Swami Dayanand Saraswati at Bhinoy Kothi, Ajmer, Rajashtan.

श्री सी.आर. चौधरी (नागौर) ः मैं सरकार के ध्यान में यह लाना चाहता हूँ कि आज़ादी के प्रथम स्वप्नदृष्टा, समग्र क्रांति के अग्रदूत, नवजागरण के पुरोधा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण 1883 में अजमेर (राजस्थान) स्थित भिनाय कोठी में हुआ। स्वामी जी का सम्पूर्ण जीवन मानव जाति के उत्थान में लगा। स्वामी जी ने समग्र क्रांति का मंत्र फूँका तथा जाति-पाति व छुआछूत को त्याज्य ही नहीं माना अपितु छुआछूत व जाति-पाति के खिलाफ समाज में अलख जगाया। सामाजिक क्रांति के साथ ही शिक्षा के प्रचार-प्रसार का स्वामी जी का इतिहास आज भी देश में सर्वोपरि है। ऐसा संत जिसने आध्यात्म सामाजिक क्रांति की अलख एक साथ जगाई, भारत के इतिहास में दूसरा नहीं है। इतना ही नहीं आज़ादी के आंदोलन में स्वामी दयानन्द सरस्वती व इनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का योगदान कभी नहीं भुलाया जा सकता। श्री बाल गंगाधर तिलक का नारा ""स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है"" में स्वराज्य शब्द स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ""सत्यार्थ प्रकाश"" में सबसे पहले उपयोग हुआ। महर्षि दयानन्द जी की यह निर्वाण स्थली आर्यों के लिए आस्था का केंद्र है। आर्य इसे अपने प्यारे ऋषि की निर्वाण स्थली ही नहीं अपितु एक प्रेरणा स्थली के रूप में मानते हैं और चाहते हैं कि इस स्थान पर प्यारे ऋषि का वृहद स्मारक बने जो विश्व के लिए एक प्रेरणा स्थली हो तथा समाज के नव निर्माण का जीवन्त स्मारक। भिनाय कोठी का अधिकांश भाग वर्तमान में आर्यों के पास नहीं है।

अतः मेरा केन्द्र सरकार से आग्रह है कि पूरे क्षेत्र को सरकार अधिगृहीत कर आर्य जगत को दिया जाए ताकि आज़ादी के प्रथम स्वप्नदृष्टा, सामाजिक क्रांति के अग्रदूत महर्षित दयानन्द जी का एक विशाल स्मारक बनाया जा सके।